Notes

अधिकार एवं ~~कर्त्तव्य~~ कर्त्तव्य सम्बन्धी जागरि-

ज्ञान को अधिकार एवं कर्त्तव्य के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करना तथा उनके विस्तार को श्रेय ज्ञान को ही जाता है। ~~कर्त्तव्य के सम्बन्ध~~ में जैसे - भारतीय संविधान का निर्माण हुआ तब अन्य देशो के संविधान का अध्ययन करने पश्चात् विद्वानो द्वारा तक तथ्य स्वीकार किया गया कि नागरिको के लिए अधिकार एवं कर्त्तव्य दोनों की ही व्यवस्था होनी चाहिए।

ज्ञान एवं सूचना में अन्तर →

ज्ञान - ① ज्ञान के अन्तर्गत आँकडे एवं सत्य सूचनाओं को समावेश होता है। इस लिए ज्ञान असत्यता को किसी प्रकार की सम्भावना नही होती

② किसी भी स्रोत से कुछ सीखना / समझना ज्ञान लेना है।

3- आज युग में किसी को ज्ञान की प्राप्ति करके एवं मँ के मानसिक स्तर पर निर्भर करता है।

~~किताबो में सिर्फ सूचनाएँ भरी है~~

4 एक शिक्षक की सहायता से उन्हे समझने में आसानी होती है।

सूचनाये: ① सूचनाओं सत्य एवं असत्यता की स्थिति पायी जाती है। जो सूचना सत्य होता है इसमे ज्ञान का रुप प्रदान कर दिया जाता है। असत्य सूचनाओं को अस्वीकार कर दिया जाता है।

② किसी भी विषय में कुछ बताना मतलब सूचना देना

③ किताबो में सिर्फ ~~कोई~~ सूचनाएँ भरी है।

③ किसी को सूचना देना अत्यधिक आसान है

Notes

ज्ञान और विश्वास में अन्तर -

(1) ज्ञान का क्षेत्र व्यापक होता है। तथा उसको एक बहुत बड़ा समूह एवं जन समुदाय द्वारा स्वीकार किया जाता है।
(2) ज्ञान के आधार पर उत्पादन की प्रस्तुति सम्भव होती है। जैसे प्रयोगशाला की गयी गैसों का प्रयोग
(3) ज्ञान का प्रभाव आधार पूर्ण सत्य होता है। उस पर स्थान परिवर्तन का कोई प्रभाव नही होता
(4) ज्ञान का सम्बन्ध विज्ञान से होता है। जिससे तथ्य को क्रमबद्ध एवं सुसंगठित रूप से प्रस्तुत किया जाता है।
(5) ज्ञान में यथार्थता का भाव निहित होता है। इसमें किसी प्रकार की कल्पना का समावेश नही होता

विश्वास :- (1) विश्वास का क्षेत्र सीमित होता है। क्योंकि इसे एक समुदाय विशेष द्वारा स्वीकार किया जाता है। जैसे हिन्दू ईश्वर तथा मुसलमान अल्लाह में विश्वास रखते है।
(2) विश्वास का सम्बन्ध उत्पादन नही होता क्योंकि इसके द्वारा किसी प्रकार की वस्तुओं को उत्पन्न नही किया जा सकता केवल माना जा सकता है।
(3) विश्वास का आधार पूर्ण सत्य नही होता स्थान परिवर्तन में विश्वास में परिवर्तन होता है। जैसे हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म।
(4) विश्वास का सम्बन्ध विभिन्न प्रकार की कल्पनाओं से होता है। जिस पर मात्र विश्वास किया जाता है। इसमें वैज्ञानिकता का अभाव होता है।
(5) विश्वास में विविध प्रकार की कल्पनाओं का समावेश होता इसके आधार पर विश्वासों में परिवर्तन होता है।

Scanned with CamScanner

Notes

ज्ञान एवं सत्य में अन्तर :-

(i) **सत्य** :- सत्य को ज्ञान का स्त्रोत माना जाता है। क्योंकि सत्य के आधार पर नवीन ज्ञान की खोज की जाती है।

(ii) तर्क की सत्यता एवं प्रमाणिकता के आधार पर उन्हें ज्ञान मे सम्मिलित किया जाता है।

(iii) सत्य को ज्ञान की खोज का मार्ग माना जाता है क्योंकि सत्य नवीन ज्ञान की खोज के आधार पर प्रेरणा एवं गतिविधियाँ प्रदान करता है।

(iv) सत्य एक प्रारम्भिक क्रिया है। जो ज्ञान के मार्ग तैयार करती है। सत्य के आधार पर व्यक्ति अनुसंधान कार्य संश्लेषण एवं प्रयोगों आदि कार्यों का सम्पन्न करता है

ज्ञान - (1) ज्ञान को प्राप्त करने का आधार गलत तर्क से नही होता तर्क में निहित सत्य होता है। यदि तर्क सत्य हो गया तो ज्ञान का विस्तार हुआ अन्यथा नही

(2) ज्ञान की सत्यता एवं प्रमाणिकता का समावेश होता है। ज्ञान को किसी भी रूप असत्य नही माना जाता जब कोई तथ्य असत्य होगा तब उसे अधूरा ज्ञान माना जायेगा अतः पूर्ण सत्य होगा

(3) ज्ञान मे क्रियाशात्मक स्थिति देखी जाती है। ज्ञान का विश्वास तर्क विश्लेषण एवं ~~संश्लेषण~~ संश्लेषण आदि है। क्रियाओं द्वारा निरन्तर रूप से चलता है।

Notes

(iv) ज्ञान अन्तिम क्रिया है। इसमें विस्तार अवश्य किया जाता है।

संज्ञान

बालक के संज्ञानात्मक विकास का आशय उसके ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया से है। जो बालक के जन्म के समय से प्रारम्भ हो जाती है। बालक द्वारा भौतिक जगत में संज्ञानात्मक विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। बालक अपने विभिन्न अंगो एवं ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है।

संज्ञान की प्रक्रिया -

बालक का लगभग 2 वर्ष का काल केवल संवेगात्मक ज्ञान की अवस्था का काल होता है। इस अवस्था काल में बालक की स्मृति अत्यन्त निर्बल दशा में होती है। स्मृति का फैलाव अत्यन्त सूक्ष्म रूप से होता है। इस अवस्था काल में अन्तिम चरण बालक संवेगात्मक प्रभाव का प्रभुत्व होता है।

मनोवैज्ञानिक की दृष्टि में संज्ञान या जानना)

बालकों में जिज्ञासा का होना प्राकृतिक गुण है। बालक जल्द से जल्द संसार में सीखना चाहता है। वह सीखने में तीव्रता प्रकट करता है। जैसे विद्यालय का पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं, स्काउट राष्ट्रीय खेल योजनाएँ एन॰सी॰सी॰ खेल कूद,

Notes

~~सांस्कृतिक~~ कार्यक्रम तथा ~~प्रमुख~~ स्थान पर भाषायें आदि ~~करने~~ ~~मे इसका प्रमुख~~ के द्वारा सीखा जाता है।

1- जीन पियाजे का ज्ञान सम्बन्धी कार्य - महान् मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे ने सन् 1960 मे अपने अध्ययन से यह समझाने का प्रयास किया है। कि संज्ञान एव ज्ञान एक मानसिक ~~क्रिया~~ है। घटना है। इस मानसिक घटना का विकास बालक में धीरे-धीरे होता है।

पियाजे के संज्ञान विकास के अन्तर्गत ज्ञान तथा उसके अर्जन से सम्बंधित बाध्दिक प्रक्रियाओ का अध्ययन सम्मिलित है।

पियाजे ने अपने विचार मे ज्ञान एवं बुद्धि का ~~समान~~ समान अर्थ मे प्रयुक्त किया है।

पियाजे के अनुसार वातावरण के सम्पर्क में आने का ज्ञान अर्जित करता है।

जैसे - जन्म के समय बच्चो मे नैसर्गिक क्षमता विद्यमान होती है। आयु एवं परिपक्वता के साथ-साथ उसके अन्दर आवश्यकाओ मे विकासित होकर एक नये ज्ञान का भण्डार बनाता है।

पियाजे ने स्पष्ट कहा है ज्ञान एक प्रकार का अनुकूलन है। जिसमे दो मानासिक क्रियाये निहित होती हैं। से क्रमस: आत्म समीकरण एव ~~अनुकूलन~~ अनुकूलन के नाम से जानी जाती है।